Seventh Series, Vol. V. No. 11

Monday, June 23, 1980
Asadha 2, 1902 (Saka)

# LOK SABHA DEBATES

(Third Session)

2(9)6
8. 8. 80

*(Vol. V contains Nos. 11--20)*

LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

*Prize Rs. 4.00*

# CONTENTS

**Seventh Series, Vol. V, 3rd Session 1980/1902 (Saka)**

*No. 11—Monday, June 23, 1980/Asadha 2, 1902 (Saka)*

| | Columns |
|---|---|
| OBITUARY REFERENCES. . . . . | 1—16 |
| (*Shri Sanjay Gandhi, M.P.*) | |
| Shri Kamalapati Tripathi . . . . . | 1—5 |
| Shri Charan Singh . . . . . | 5 |
| Shri Samar Mukherjee . . . . . | 5—6 |
| Prof. Madhu Dandavate . . . . . | 6 |
| Shri C.T. Dhandapani . . . . . | 6—7 |
| Shri Atal Bihari Vajpayee . . . . . | 7—8 |
| Shri Indrajit Gupta . . . . . | 8—9 |
| Shri Yashwantrao Chavan . . . . . | 9—10 |
| Shri A. Neelalohithadasan . . . . . | 10—11 |
| Shri Mani Ram Bagri . . . . . | 11—12 |
| Shri G.M. Banatwalla . . . . . | 12—13 |
| Shri Amar Roy Pradhan . . . . . | 13 |
| Shri Ghulam Rasool Kochak . . . . . | 13—14 |
| Shri N. Soundararajan . . . . . | 14 |
| Shri Frank Anthony . . . . . | 14—15 |

## LOK SABHA

*Monday, June* 23, 1980/*Asadha* 2, 1902 (*Saka*).

*The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.*

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

### OBITUARY REFERENCES

DEATH OF SHRI SANJAY GANDHI, M.P.

MR. SPEAKER: It is with most profound sorrow that I rise to announce the untimely death of Shri Sanjay Gandhi, a Member of this House. It is a tragedy of human life that many a time a most promising career is cut short before it fulfils the high expectations and promises. He stood like a rock by his mother, the Prime Minister, in times of great stress and strains through which she was passing. He came to symbolise the growing power of the younger generation of the country and it was he who tried to mould his youth powers into constructive and nation-building activities. He was a promising young parliamentarian and made his mark rapidly into this sphere. We had expected great things from him and we were quite sure that he would be able to fulfil these expectations with abundant confidence. Words fall short to express our sorrow. Our hearts go out to the Prime Minister and we can only assure her in this great moment of shock and tragedy that we will try to fulfil the promise and the dreams which Sanjay Gandhi put before the youth of this country.

**रेल मंत्री (श्री कमलापति त्रिपाठी):** मान्यवर, ऐसे समय में कुछ कहना बड़ा कठिन हो जाता है। एक बड़ी दु:खद घटना घटी, ऐसी घटना जो हृदय विदारक है मान्यवर, और सारे देश को और संसार को स्तब्ध कर देने वाली है।

संजय जी, आज एक हवाई दुर्घटना के शिकार हो गये। एक विकसित होता हुआ जीवन, देश की सेवाओं में बढ़ता हुआ जीवन, इस तरह समाप्त हो जाए, तो हमारी सदन के लिए भी और राष्ट्र के लिए भी बड़े दु:ख और पीड़ा का कारण होता है। एक बहुत बड़ा धक्का लग रहा है हम सब को और हमारे देश को। ऐसा लगता है कि जैसे एक वृक्ष बढ़ रहा था विशाल होने के लिए, सहसा उस पर बज्रपात हुआ और बीच में ही वह समाप्त हो गया।

संजय जी, मान्यवर, इस सदन के सदस्य थे, थोड़े ही समय सम्मानित सदस्य रहे हैं। हम ने एक पार्लियामेन्टेरियन के रूप में उन के काम को देखा है। ऐसा लग रहा था कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जो राष्ट्र की सेवा के मार्ग में उभरते हुए जीवन का प्रतीक है। संजय गांधी एक ऐसे व्यक्ति रहे हैं कि बहुत से विवादास्पद विषयों में उन का नाम लिया जाता रहेगा। उन के ऊपर आरोप भी लगे हैं, बहुत सी जांच-पड़तालें हुई हैं और सब जगह। से वे निष्कलंक और निर्दोष निकले हैं। देश की नई पीढी और युवकों की भावना और आंकाक्षाओं के तो वे प्रतीक थे। हमारे देश के नौजवानों की बड़ी आस्था और बड़ा विश्वास उन में था। उन के व्यक्तित्व ने करोड़ों नौजवानों को प्रभावित किया।

मान्यवर, इस समय कुछ और अधिक कहना मेरे लिए संभव नहीं हो रहा है। मेरा ध्यान रह रह कर प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा जी के प्रति जाता है। उन में बड़ी धीरता मैंने देखी है, बड़ी दृढ़ता देखी है। मैंने देखा है कि संकटों का सामना किस संतुलन के साथ, किस धीरता और दृढ़ता के

[श्री कमलापति त्रिपाठी]

साथ, धैर्य और साहस के साथ करने की उन में शक्ति है, क्षमता है।

मान्यवर, मैं अभी-अभी विलिंग्डन अस्पताल में गया था। वहां जिस संतुलन और धैर्य के साथ उन्हें लोगों से मिलते देखा, उसे देख कर के आश्चर्य हुआ। इस दुर्घटना में एक पायलट भी मर गया है। मान्यवर, उसके परिवार के लोग आये हुए थे। वे द्रवित हृदय से रुदन कर रहे थे। जिस धीरता के साथ, सहानुभूति के साथ, स्नेह के साथ और संतुलन के साथ इन्दिरा जी उन्हें समझा रही थीं, उन्हें धैर्य बंधा रही थीं, वह देख कर के, मान्यवर, मैं तो चकित हो गया। मैं यह मानता हूं और यह जानता भी हूं कि ऐसे समय में एक मां की, उसके हृदय की क्या स्थिति हो सकती है?

मान्यवर, मैं नम्रता के साथ कह सकता हूं कि नेहरू परिवार से मेरा बड़ा पुराना सम्बंन्ध रहा है। मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मान्यवर, 1921 से, गांधी जी की पुकार पर, देश की स्वाधीनता के युद्ध में भाग लेने का, आगे बढने का। उसी समय से, मेरा सम्बन्ध नेहरू परिवार से रहा है। मान्यवर, मैंने पंडित मोती लाल नेहरू के नेतृत्व में काम किया। मैंने देखा कि किस प्रकार देश सेवा के, राष्ट्र की सेवा के, बलिदान और त्याग के वे प्रतीक बन गये थे। आरंभिक गांधी युग में, सन् 1930 में उनका लखनऊ में देहान्त हुआ। उस के बाद जवाहर लाल नेहरू के साथ काम करने का अवसर मिला। वैसे उनके साथ तो पहले ही से काम करने का अवसर मिलता था। वे हमारी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पदों पर रहे, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पदों पर रहे, हमारे अध्यक्ष रहे। उन के साथ काम करने का मौका मिलता रहा। वह दूसरी पीढ़ी थी।

मान्यवर, मैंने इन्दिरा जी को उस जमाने से देखा है जब वे छोटी बच्ची थीं। मैंने गांधी जी की बगल में उन्हें बैठे देखा, उनकी उंगली पकड़े हुए, चलते हुए देखा। मैंने उन्हें स्वतत्रता संग्राम की सैनिका के रूप में भी देखा है। मैंने उन्हें सन् 1942 के आन्दोलन में, इलाहाबाद की नैनी जेल में जेलवासिनी के रूप में देखा। मैंने उन्हें अपने नेता और प्रधान मंत्री के रूप में भी देखा और उनके साथ अपने को काम करते हुए भी पाया है। संकटों में वे किस प्रकार नेतृत्व कर सकती हैं, चुनौतियों को स्वीकार कर सकती हैं, यह भी मैंने देखा है।

मान्यवर, मैं संजय के पिता फिरोज गांधी के साथ भी रह चुका हूं। गांधी जी के युग में देश के आन्दोलनों में वे मेरे साथ थे। जो भी आन्दोलन हुए, 1921 के आन्दोलन में तो नहीं, पर उस के बाद चाहे जो भी आन्दोलन हुए हैं, 30 के, 32 के और 40 के, 42 के आन्दोलनों में मेरा उनका साथ था। वे संजय के पिता जी थे। इस कारण से, मान्यवर, यह परिवार पुश्तों से पीढ़ियों से, देश की सेवा के मार्ग में, त्याग, बलिदान दृढ़ता और नेतृत्व का प्रतीक रहा है। संजय जी इन्दिरा जी के पुत्र थे, उसी परिवार में थे। उन में विशालता, दृढ़ता और नेतृत्व प्रदान करने की शक्ति का होना स्वाभाविक था।

'आकरे पद्मरागाणाम् जन्म कांचमणिः कुतः'। लाल की खान में शीशा पैदा नहीं हुआ करता, मान्यवर। उस परिवार में वह पैदा हुए थे। उनमें देश को नेतृत्व प्रदान करने की शक्ति थी, सामर्थ्य था, प्रतिभा थी। आज वह सहसा लुप्त हो गई है। हमारा हृदय स्वभावतः इंदिरा जी की तरफ जाता है। उन में बड़ी क्षमता है, बड़ी शक्ति है। हम लोग बहुत दुःखी हैं। एक धक्का लगा है हृदय को सहन करना मुशिकल हो रहा है। वह तो मां है, मान्यवर। उन्हें जो धक्का लगा है, आघात पहुंचा है, उस में हम सब की गहरी सहानुभूति है। हम तो परमात्मा से यही प्रार्थना कर सकते हैं कि वह क्षमता और दृढ़ता इंदिरा जी को, मेनका जी को और एक छोटा सा बच्चा है, उन सब को प्रदान करे, इस दुर्घटना की भयानक चोट को सहन करने की शक्ति उन में उत्पन्न करे। मैं इंदिरा जी को केवल इतना कह सकता हूं कि आपके दुख में हम सब दुःखी हैं, सारा देश दुखी है। आप में दृढ़ता है, शक्ति है, राष्ट्र आपके नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहा है। आप में धैर्य है, सहन करने की शक्ति है। हम सब आपके दुःख में दुःखी है और उस दुःख को बांटते

हैं। भगवान आप और आपके सारे परिवार में इस कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

हम सब उनके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हैं और उनके दुःख में मान्यवर अपनी हार्दिक पीड़ा व्यक्त करते हैं।

**श्री चरनसिंह** (बागपत): अध्यक्ष महोदय आपने और माननीय त्रिपाठी जी ने इस दुर्घटना के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा है मैं अपने को और अपने दल को उसके साथ सम्बद्ध अर्थात् एसोसिएट करना चाहता हूं। यह मामूली घटना नहीं हुई है। एक नौजवान जो बहुत से लोगों की आशाओं का केन्द्रबिन्दु था, जो बहुत पुरुषार्थी था और देश के लिए तरह-तरह के सपने अपने हृदय में संजोए हुए था, वह चला गया है। जाना तो सब को ही एक रोज। जो आया है वह जरूर जाएगा। लेकिन समय होता है। यह एक अकाल मृत्यु है। यह दुःखमय क्षण है, बहुत दारुण दुख का कारण है उन सभी के लिए जो मृतात्मा से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखते हों। विशेषकर जो बहुत निकट के सम्बन्धी हैं जैसे हमारी बहन इंदिरा जी, उनकी पत्नी, बच्चा तो अभी अबोध है, उनके दुःख का किन्हीं शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। जैसा कि माननीय त्रिपाठी जी ने कहा मैं भी अपने और अपने दल की ओर से शोकसंतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि आप हमारी संवेदना को उन तक पहुंचा देंगे और साथ ही परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनको इतना धैर्य दे कि वे इस आघात को सह सकें।

SHRI SAMAR MUKHERJEE (Howrah): We express our very deep sorrow at the sudden demise of such a young man, who had already developed himself to be a topic of the country. The news was so sudden that when we got it, we could not believe that such a tragedy can happen so suddenly. His memory is very fresh in our minds because the other day also, he was amongst us here. There is no doubt that he was full of potentialities though we may not agree with his outlook. But it is a great tragedy no doubt. So, for this shock which his family has got, for this great tragedy, we have very deep sympathy. We request you to convey sorrow to the mother as well as to the relatives of Mr. Sanjay Gandhi.

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur): Sir, in this House, whenever you make obituary references, the Prime Minister rises from her seat to join you and the House. To day, we find that seat vacant and today, we have to console the Prime Minister for the great loss that she has suffered. I am sure, we all will join you in conveying to the Prime Minister and the members of the bereaved family our heart-felt condolences. As Chaudhury Sahib rightly said, man has to pass away one day or the other. But in the prime of youth, Sanjay Gandhi has passed away. He had the shortest political life and the briefest parliamentary career. He had an element of adventure in his political life and the same spirit of adventure he displayed in his death. That is the irony of his life. But I am sure that that spirit of adventure will enthuse the remaining youth to see that the youth power is developed. I do not want to say anything more. But I can well imagine the anguish and the agony of the Prime Minister. It is not the agony and anguish of a Prime Minister alone, but it is the agony of a mother. I am sure, not only the members of this House, but all the children in this land, all sons and daughters will join you in conveying our condolences to her, the mother of Sanjay Gandhi.

SHRI C. T. DHANDAPANI (Pollachi): We lost one of the greatest personalities of this country. We find it a very difficult to recover from the shock which we had in the morning. Mr. Sanjay was one of the greatest sparks of the Nehru family. He revitalised the political pattern of this country. He involved himself in the youth movement and he was responsible for new thinking in the political field. Sir, the Prime Minister has lost her one son, but I want

[Shri C. T. Dhandapani]

to tell through you, Sir, that every youth of this country will act as son of the Prime Minister and they will stand by her. It is a great shock to me and my party, I convey our deep sorrow and heart-felt condolences on my behalf, on behalf of my party, DMK and my leader, Dr. Karunanidhi.

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी** (नई दिल्ली): अध्यक्ष महोदय, जिस दिन लोक सभा की बैठक शुरू हुई थी और हम शोक प्रकट कर रहे थे, तब मैंने कहा था कि कोई मौत झपट्टे की तरह से आती है, भरी दुपहरी में अंधियारा कर देती है, किसी फूल को पूरी तरह से खिलने से पहले ही झुलसा कर राख में बदल देती है। किसे पता था कि आज ऐसी ही मौत की अंधियारी छाया में हमें इकट्ठा होना पड़ेगा?

कल तक श्री संजय गांधी हमारे साथ थे। मित्रों के लिए आशा का केन्द्र, मतभेद रखने वालों के लिए एक चुनौती, लेकिन चाहे समर्थक हों, चाहे विरोधी, सब इस बात से सहमत थे कि उनका एक ऐसा व्यक्तित्व है, जो खतरों से खेलता है, चुनौतियों से जूझता है, जिसने आगे बढ़ने का संकल्प किया है और वह तरुणाई का प्रतीक बन कर उभर रहा है।

जब ऐसा लगता था कि उनके लिए सार्वजनिक जीवन का पटाक्षेप हो गया, तब भी संजय गांधी परिस्थितियों से लड़े, और इतना ही नहीं कि लड़े उनपर विजय प्राप्त करने में सफल हुए। आपने ठीक कहा है, मैं त्रिपाठी जी और अन्य मित्रों से सहमत हूं कि एक उभरता हुआ व्यक्तित्व हमारे बीच में से उठ गया।

मुझे संस्कृत का एक सुभाषित याद आ रहे है: "मुहूर्त ज्वलितं श्रेयः न च धूमायते चिरम्"—सालों तक धुंआ देने के बजाय एक मुहूर्त के लिए प्रकाशमान हो कर बुझ जाना ज्यादा अच्छा है। मगर बुझ जाना अच्छा नहीं हो सकता है। वह प्रकाश लगातार बना रहता, बहुत दिनों तक बना रहता, लेकिन क्रूर काल के सामने किसी का बस नहीं चलता है।

अभी मैंने उनके शव को देखा। मौत में भी एक मासूमियत उनके चेहरे पर छाई हुई थी। और मौत भी शायद खतरों से खेलने के उनके संकल्प में से प्राप्त हुई। सवेरे-सवेरे हवाई जहाज ले कर उड़ जाना, वह बड़े व्यस्त हैं, लोग आते हैं, पार्टी का संचालन कर रहे थे, शासन की नीतियों का निर्धारण कर रहे थे, लेकिन फिर भी हवा में उड़ना, खुद हवाई जहाज चलाना। मुझे याद है कि एक बार पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था: "लिव डेंजरसली"--नौजवानों से कहा था कि खतरे ले कर जिओ। और ऐसा ही एक जीवन खतरों से खेलते खेलते भरी जवानी में आज खतरे का आहार बन गया।

हम सब आज शोक से भरे हुए हैं। प्रधान मंत्री के प्रति, संजय गांधी के परिवार के प्रति किन शब्दों में संवेदना व्यक्त करें, यह तय करना मेरे लिए तो मुश्किल है। अभी मैंने इन्दिरा जी को देखा। हम लोग जो वहां जा रहे थे, वे अधिक विचलित थे। मां हो कर भी वह बड़ी दृढ़ थीं। हम उनके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हैं और उम्मीद करते हैं कि भगवान् उनके शोक-संतप्त परिवार को इस हृदय-विदारक चोट को सहन करने की शक्ति देगा।

SHRI INDRAJIT GUPTA (Basirhat): Mr. Speaker, Sir, I do not think this is an occasion for making a lengthy speech. The suddenness of this tragedy has taken all of us by shock, and I know that whatever words are spoken here, it is not possible to really share the grief of a mother who loses her son, Mr. Sanjay Gandhi himself was no doubt a controversial figure, but all controversies—political controversies—are stilled in the face of death. I saw him here on Friday last, in the prime of his youth. He was full of energy, full of enthusiasm. But, then, no one can ever say when the hand of fate descends on a particular person and, no doubt, the circumstances under which this tragic event has taken place cannot but create a deep feeling of sorrow and shock throughout the country.

The Prime Minister, Sir, as the whole country and the whole world knows, is a person of indomitable courage. Those who have already seen her and met her this morning—I have not yet been fortunate enough to do so—have already pointed out the fact that she is behaving as one would expect her to behave—probably the most composed and the most calm and courageous amongst all of us. This loss will, I think, be quite a shattering blow for her from many points of view but, at this moment atleast, I think of her mainly as a mother who had pinned very great hopes and aspirations on Sanjay, as many others had. I can understand the deep grief and dismay of our friends of the ruling Party and certainly express our deep condolences to them also, but the tragedy means something different to the mother and to the young wife. The son, of course, is still too young, perhaps, to understand what has happened.

So, Sir, on behalf of myself and my Party, I would like to express our deepest sorrow and condolences with the family and I hope you will convey that to them.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN (Satara): Mr. Speaker, Sir, it was such sudden, tragic news that struck us this morning that it was very difficult to believe it. We were reading the news about his visit to Leh yesterday with his wife and, only a few minutes thereafter, we heard the news that an accident has taken place and his death came.

Mr. Sanjay Gandhi was a Member of this House and we saw him only two days ago, participating in the proceedings of this House. Naturally, he was beginning to make his contribution to the great House. He was a young leader of the Congress (I). He was developing himself into a personality with full potential. Naturally he had his own following in the country amongst the youth and the Party opposite also had faith in him. Unfortunately his bright career was cut short so suddenly and so tragically. Naturally, this calamity is great for the Prime Minister—not only the Prime Minister but the mother—and as rightly pointed out by Shri Indrajit Gupta, this tragedy is something unbearable to the young wife. I think our heart goes out to both of them—Mrs. Gandhi and Mrs. Menaka—for this loss.

Sanjay Gandhi was developing into a personality, a national personality, and naturally, I think, not only in India but all the world over, people were watching the development. But the fate willed the other way and unfortunately he has been cut away from life. He was full of promises, full of hopes.

Mr. Speaker, Sir, on my behalf and on behalf my Party, I request you to convey our feelings to Shrimati Indira Gandhi as a mother, as Prime Minister and as Leader of a Party, that we all share her grief, her family grief, intensely. When the Parliament says that it shares the grief, I think, it shares it on behalf of the nation, it is not only the Members of Parliament but every man, every woman and every child in the country share his grief. Please convey this to Shrimati Indira Gandhi and her family members.

**श्री ए. नीलालोहिथादसन** (त्रिवेन्द्रम): अध्यक्ष जी, श्री संजय गांधी के आकस्मिक निधन पर जो विचार प्रकट किए गए हैं, उनके साथ मैं और अपने साथियों को शामिल करता हूं।

श्री संजय गांधी नेहरू परिवार के एक सदस्य होने के कारण बचपन से ही उनकी जान-पहचान सारे भारत और सारी दुनिया में होती थी। राजनीति में भी वे बचपन से ही प्रभावित रहे हैं, लेकिन 1975 के बाद वे सक्रिय राजनीति में आये। सक्रिय राजनीति में आने के बाद पिछले पांच वर्षों के अन्दर उनको राजनीति में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। एक राष्ट्र के जीवन में और एक व्यक्ति के जीवन में पांच वर्ष तो बिल्कुल छोटा काल है। इस पांच वर्ष के बीच में उनको कई

[श्री ए. नीलालोहिथादसन]

चुनौतियों का सामना करना पड़ा। राजनीतिक जीवन में उन्होंने अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का मुस्कराहट के साथ और धैर्य के साथ सामना करते हुए, एक इतिहास भी खींचा। देश के कुछ नौजवानों के लिए तो वे प्रेरणा स्रोत रहे। जो नौजवान साथी उनके कार्यों से प्रभावित रहे हैं, उनके लिए भविष्य में भी प्रेरणा स्रोत रहेंगे--ऐसा मेरा विचार है।

उनके आकस्मिक निधन से एक बहुत बड़ी हानि हमारी राजनीति और हमारे राष्ट्र को हुई है, इसलिए कि इस देश के लोग और दुनिया के कुछ लोग उनसे बहुत ही अपेक्षा और कामना करते रहे हैं। उनके निधन पर मैं और अपने साथियों की ओर से श्रीमती इंदिरा गांधी और श्री संजय गांधी के परिवार के अन्य लोगों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

**श्री मनीराम बागड़ी** (हिसार): मान्यवर यह कहर की मौत आज न सिर्फ देश में बल्कि दुनिया में एक आग की तरह से खबर बन कर फैली है। यह सभी चाहे कोई मां है पुत्र वाली, चाहे कोई पत्नी है पति वाली, चाहे कोई भाई है भाई वाला और चाहे कोई बच्चा है बाप वाला, समस्त परिवार में उसको दुःख की घटना फैली है।

मान्यवर, मैं यह बात मानता हूं कि यह खबर आम तौर से किसी के दिल पर जचती नहीं कि यह दुर्घटना घटी है। मेरा मकान बिल्कुल नजदीक है। ज्योंही एक आदमी भाग कर मेरे पास आया और मुझे कहा कि यह दुर्घटना हो गई है, तो मैंने कहा--चुप करो, इस बात को फैलाओ नहीं, कहीं यह गलत न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। उसने कहा--मैं मौके पर हो कर आया हूं। मैंने फिर भी यही कहा---ऐसा नहीं हो सकता। जब मैं खुद मौके पर गया और देखा तो डाक्टर के कहने से भी तसल्ली नहीं हो रही थी। पं. कमलापति जी वहां खड़े थे, दूसरे लोग खड़े थे और यह बात सही है, इन्दिरा जी हिन्दुस्तान की प्रधान मंत्री हैं, दल की नेता हैं, सदन की नेता हैं, 60 साल से ऊपर की उम्र है, नौजवान बेटों की मां हैं, उम्मीद यह थी कि जिस तरह से गांव के घरों में मां बेटे की मौत सुन कर पछाड़ खाकर गिर जाती है, बेहोश हो जाती है, वह भी पछाड़ खाकर गिर जायेगी, लेकिन जब मैंने उन को बात करते हुए, अपने दिमाग पर सन्तुलन को कायम रखते हुए देखा, तो मन में यह भाव आया कि आखिर भारत की सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान कहीं-न-कहीं तो टिका हुआ है, जो मौत की स्थिति में भी धीरज बंधाता है। मौत यकीनी है--यह ठीक है, मगर यह तो मौत नहीं है, कहर है। मौत होती है--समय के अनुसार। मौत होती है तो बेटों के कंधों पर बाप-दादे जाते हैं। लेकिन ऐसा दुर्भाग्य भी कभी-कभी देखने में आता है, जब दादा और परदादा के कन्धों पर बेटा और पोता जाय।

मान्यवर, संजय जी इस सदन के माननीय सदस्य थे। युवा लोग उन को नेता के रूप में देखते थे। पक्ष के लोग उन को एक बढ़ते हुए सितारे की तरह से समझते थे। विपक्ष के लोग उन की आलोचना करते थे और संसार के लोग उन को भारत की उन विभूतियों में से गिनते थे जिन से देश का कुछ भविष्य बनने वाला था। मेरी तरफ से और मेरे साथियों की तरफ से यह जो शोक प्रस्ताव सदन पास करने जा रहा है--उसमें शामिल होते हुए, मैं इन्दिरा जी, संजय जी की पत्नि, उनके पुत्र, उनके युवा भाई और उनके परिवार के सभी सदस्यों और मित्रों, साथ में उन के दल, तथा जिस दल के वे सचिव थे उस दल को, खास कर उन के युवा साथियों जिनके कारण वे आगे बढ़ कर आये, जो क्षति और तकलीफ हुई है, उसमें अपने आप को भी शामिल करता हूं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार और उन के दोस्तों और मित्रों को इस महान् क्षति को सहन करने की शक्ति दे। साथ ही भगवान संजय जी तथा उन के साथ जो संचालक थे, जिनके करण वे आगे बढ़ कर आये, जो शान्ति दे और इस देश में कभी भी ऐसी अकाल युवा मृत्यु न हो---ऐसी भगवान से प्रार्थना करता हूं।

इन शब्दों के साथ इस सदन में सभी दलों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किये हैं, उनके साथ हम भी शामिल होते हैं।

SHRI G. M. BANATWALLA (Ponnani): Mr. Speaker, Sir, on behalf of the Indian Union Muslim League, I rise to associate ourselves with the sentiments that have been expressed,

It is an unspeakable grief and shock to know that Mr. Sanjay Gandhi is no more. He may be no more, but, Sir, he has become a living example of stout challenges to adversities. Indeed, a young, blooming and bright career has been cut short.

All are deeply grieved. But, we hope that the Prime Minister bears and puts up with this tragic loss with strength and courage which is characteristic of her.

Sir, we pay our homage to the departed soul. There is an Urdu couplet:

खिल के गल कुछ तो बहार जाफिजा दिखला गय
हसरत तो उन गर्चा पर है जो बिन खिल मुझा गये ।

کھل کے گل کچھ تو بہار جانفزا
دکھلا گئے -

حسرت تو ان غنچوں پہ ہے جو بن
کھلے مرجھا گئے ۔۔

SHRI AMAR ROY PRADHAN (Cooch Behar): Mr. Speaker, Sir, we are shocked at the sad demise of Sanjay Gandhi. On behalf of my Party, Forward Block, and on my own behalf, we share the deep sorrow with you and other Members of this House.

Mr. Speaker, Sir, Sanjay is no more. The cruel destiny has snatched him away from us. But, Sir, it is a more cruel and painful job that we are to perform—the older mourn for the younger. Sanjay, at the prime of his youth, just at the age of 33, full of vigour and energy, passed away. Mr. Speaker, Sir, please convey our sentiments and sorrow to the bereaved family, particularly, to the mother, Shrimati Indira Gandhi, the Prime Minister, and his wife, Mrs. Menaka Gandhi.

SHRI GHULAM RASOOL KOCHAK (Anantnag): Mr. Speaker, Sir, we have lost our brother, late Sanjay Gandhi. He was not only the son of Indiraji, but the son of the soil of India. We have lost in him that budding youth leader who was the future hope of India. He had an objective in mind. To achieve that objective, he had the dynamism in his heart and he has demonstrated to the fullest extent that within the shortest span of time, he has earned a name in our history and his name would live in history not only serving as a light to the younger generation but he fought in such a way, in a gallant way, especially in the service of the country. It is a tragedy not only for the Nehru family but it is a tragedy for all of us and for the whole country. We had seen, as my brother friends have said, the son of Indiraji. We had seen a sun which set immediately and was clouded by darkness.

I join with the sentiments expressed by the House. On behalf of me, my Government and my Party, the National Conference, on this sad demise and express my deep feelings of sorrow on the departed soul to the bereaved family. I hope and pray to God 'Let the soul rest in peace and let the family be bestowed and blessed by God with perseverance and patience'.

SHRI N. SOUNDARARAJAN (Sivakasi): Mr. Speaker, Sir, on behalf of my leader Thiru MGR and my party AIADMK, I associate myself with the sentiments expressed in the House on the sudden demise of Shri Sanjay Gandhi. The blossoming bud of humanity has been snatched away in all its fragrance. It is the most cruel thing of human life that the young ones should die prematurely. Time has come to standstill. My heart bleeds for our country's leader, Shrimati Indira Gandhi, whose loss can never be compensated. I bow in silence to the memory of the nation's youth leader.

SHRI FRANK ANTHONY (Nominated-Anglo-Indians): Mr. Speaker, Sir, what has happened is an unspeakable tragedy not only for the mother

[Shri Frank Anthony]

but for the whole family. Indeed it is an unspeakable tragedy for the whole country. Sanjay had very recently surmounted the worst kind of personal ordeal, calumny, character assasination and false prosecution to emerge at the centre of India's public life with a great promise not only for his party but for the country. At a time like this. Mr. Speaker, words are utterly inadequate. Our hearts go out to the family. May God give them strength to bear this terrible Cross.

MR. SPEAKER: We deeply mourn the loss of Shri Sanjay Gandhi and I am sure the House will join me in conveying our deep-felt condolences to the Prime Minister and to the bereaved family.

The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

*The Members then stood in silence for a short while.*

MR. SPEAKER: As a mark of respect to the deceased, the House stands adjourned to meet again at 11 A. M. tomorrow.

**11.54 hrs.**

*The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, June 24, 1980/Asadha 3, 1902 (Saka).*

---

GMGIPMRND—M—672 L.S.—21-7-1980